मुरली

• आलोक मेहता

"अरे मियां, उठिये भी. क्या अभी से सोने लगे! कैबिनेट के नामों का फैसला हो जाये तो फिर आराम से दो-चार बरस सो लेना." रहमान साहब ने उस छोटे से कमरे में चल रही गर्मागर्म बहस से अलग हटकर किनारे पर आंखें बंद करके पैर पसार चुके मुरलीधर आजाद को महफिल में लाने के इरादे से कहा.

चुनाव की एक महीने की मारामारी और एक हफ्ते से पार्टी में चल रही खींचातानी से परेशान मुरली ने चिढ़कर कहा, "जो चाहो फैसला करवा दो रहमान साहब, देखता हूं, कैबिनेट से मेरा नाम कैसे कटता है! खाली नोटों के बल पर राजनीति नहीं करता मैं और न ही भीख मांगता हूं. पच्चीस नाम अब भी जेब में हैं. कल राज्यपाल को अलग होने की लिस्ट दे दूं, तो ये आपका रत्नप्रकाश दुम हिलाता मेरे पीछे घूमता दिखेगा."

रहमान साहब ने मुरलीधर आजाद को शांत करने के इरादे से कहा, "भाई जान, हो सकता है रत्नप्रकाश सच ही कह रहे हों. हाई कमान ने ऑब्जेक्शन लगा दिया हो?"

इस अटकल ने मुरली को और अधिक उत्तेजित कर दिया. "हूं! कौन से साला कमान की बात करते हैं आप? वहां, जहां ये सब लार टपकाते हुए जाते हैं और 'हां-जी, हां-जी' का नाटक करके दूसरों के खिलाफ जहर भर आते हैं. सब समझता हूं इनकी चालें. अब मैं इन्हें चरित्रहीन दिखने लगा हूं और जब हरिजन बस्ती में कोई घुसने नहीं देता था, तो मैं इनके लिए चरित्रवान और पार्टी का सबसे बड़ा रहनुमा था? कैरेक्टर, हूं! मैं तो सब कुछ खुलेआम कहता और करता हूं. लेकिन ये हमारे नेताजी, सुबह-शाम पूजा का ढोंग करके दो बोतल ह्विस्की उड़ाते हैं और हर तीसरे दिन किसी असहाय औरत की मजबूरी का फायदा! मैं तो पैसा देता हूं या दोस्ती रखता हूं और ये सब देते हैं—झूठे ख्वाब और टेंपरेरी नौकरी, ताकि जब तक नौकरी रहे, औरत इनके चंगुल से बाहर न जा पाये. पूछे हाई कमांड मुझसे .... या करें ये सबके सामने बात, इनकी तो ऐसी ...!"

"बस...बस मियां, आप तो खफा हो गये. सो जाओ. मुझ पर क्यों गर्म होते हो." रहमान साहब ने यहीं बात बंद करना ठीक समझा, वरना मुरली के साथ मिलकर नेता के खिलाफ षड्यंत्र करने के लिए कोई उनका ही नाम उछाल देगा और कैबिनेट में पका-पकाया नाम नीचे टपक जायेगा.

वह भी थोड़ा खिसककर चुपचाप आंखें मूंदकर बैठ गये. सामने वाले कोने में आठ-दस विधायकों के बीच चल रही राजनीतिक बहस जारी थी—"डेमोक्रेसी, खाक है डेमोक्रेसी पार्टी में. जो नेता चाहे, वही होगा, तो फिर इतने नुमाइंदे चुने क्यों जाते हैं? खाली हाथ खड़ा करने या अंगूठा लगाने के लिए!"

"नेता भी तो आपने-हमने मिलकर चुना है. किसने जबरदस्ती की थी. यदि उसकी ताकत का लोहा माना है, तो उसकी बात भी मानो."

"लेकिन उसे भी हमसे सलाह-मशविरा करना चाहिए—उसे सिंहासन पर बिठाकर राजा तो नहीं बनाया ...."

बस इसी बहस के जाल में पड़ते-पड़ते रहमान साहब को सामने

बैठे मुरली की जिंदगी आंखों में घूम गयी. पढ़ते थे, तब से जानते हैं वह उसे. युनिवर्सिटी की यूनियन के इलेक्शन में भी वह मिश्रित पैनल जमात अपनी टांग अड़ाता रहता था. अपने इलाके के दस-बीस लड़के इसके यार थे और जिस गुट को हराना होता, ये लोग धौंस-पट्टी, उठा-पटक और लात-लक्कड़ से पासा पलटकर ही छोड़ते थे. कई बार वाइस चांसलर की मेज पर छुरा गाड़ा था—कमाल ने और बात मनवाकर दम लिया था. एक बार लाठी-चार्ज हुआ, तो एक पुलिस सुपरिंटेंडेंट की छाती पर चढ़ बैठा और तब तक मारता रहा, जब तक एक सिपाही ने अचानक इसके सिर पर पूरी ताकत से लाठी नहीं मारी.

इसके बाद पता लगा था, बेचारे के बाप की मौत हो गयी. जवानी का जोश, दो जून की रोटी के लिए ठंडा होने लगा. बेवा मां और चार बहनें. बाप की कमाई होने तक कोई फिक्र नहीं की. अब लोगों के दरवाजे ताकने पड़ रहे थे. मजबूरी इंसान को गिराती भी है और चढ़ाती भी है. कहते हैं, उन दिनों मुरली भीगी बिल्ली बन गया था. गर्म खून को वक्त का इंतजार करना था. उसने परिस्थितियों के सामने सिर झुका दिया.

उन्हीं दिनों पं. रत्नप्रकाश, जो अब मुख्यमंत्री हैं और तब म्युनिसिपल कमेटी के चेयरमैन की निगाह हरिजन बस्ती के इस नौजवान पर पड़ गयी. पंडिताई के कारण हरिजन बस्ती में न उनकी अधिक ठहरने की इच्छा होती थी और न ही वे लोग चुनाव में उन्हें घास डालते थे. फिर उनका प्रतिद्वंद्वी रामदास हमेशा इसका फायदा उठाता था. मुरलीधर जाटव, जो तब सिर्फ 'मुरली' था—उनके लिए दो शिकार कर सकता था. वक्त-बेवक्त की हाथापाई और चुनाव के समय हरिजन वोट.

एक शाम करीब आठ बजे उन्होंने मुरली को अपने बंगले पर बुलवाया. उस जैसे बकरे को हलाल करने से पहले उसे अच्छी तरह दुलारा. पिता की मौत पर भरे गले से सहानुभूति प्रदर्शित की और डेढ़ सौ रुपये महीने पर सेक्रेटरी बनने का प्रस्ताव रखा. मुरली इस प्रस्ताव पर चौंका, 'यह बामन मुझे इतनी लिफ्ट क्यों मार रहा है? सुना तो था कि यह उसकी बिरादरी के लोगों से बेहद नफरत करता है.' दिल की आवाज को दिमाग की व्यावहारिकता ने दबाया, 'लोगों की बातों से क्या करना है. इससे सुनहरा मौका कब मिलेगा? फिर अपनी बस्ती-बिरादरी के सामने नाक ऊंची हो जायेगी और रोब भी बढ़ जायेगा.'

मुरली ने झुककर रत्नप्रकाश 'जी' के पैर छुए और वायदा किया, "इस मुसीबत में पनाह देने के लिए मैं जिंदगी भर आपका एहसानमंद रहूंगा." पंडित रत्नप्रकाश ने पीठ थपथपाकर उसे अपने पास बैठाया और पहला सबक दिया—"मुरली, मेरे साथ काम करने के लिए एक बात याद रखना. अंदर की बात अंदर, और बाहर की बाहर. दोनों में तुलना करके कभी अपना दिमाग खराब मत करना. अच्छा छोड़ो, तो अब थोड़ी पूजा कर ली जाये."

"जी हां... जी हां, मुझे इजाजत दीजिए." मुरली ने झुकते हुए विदा लेनी चाही.

"क्यों... अब तुम मेरे सेक्रेटरी हो... दिन-रात, अच्छे-बुरे के साथी." यह कहते हुए वह मुड़े और अलमारी में पुस्तकों की शेल्फ के पीछे से एक रंगीन बोतल निकालने लगे. फिर बोले, "देवि का प्रसाद लेने में तुम्हें परहेज तो नहीं?"

बेचारा नया-नया सेक्रेटरी कैसे मना करता! बोतल खुली और फिर खुलती ही रही. पांच-छह पैग के बाद रत्नप्रकाश भावुक होते चले गये—"क्या बिगाड़ा है मैंने इन लोगों का. हरिजन-बस्ती में सड़क, स्कूल, अस्पताल—क्या-क्या नहीं करवाया! लेकिन यह रामदास जहर उगलता रहता है. भई, तुम्हारे लिए कुछ करूंगा, तो अपनी जात-बिरादरी के लोगों को ताक पर बैठाकर नहीं रख दूंगा. बताओ मुरली, क्या बुरा करता हूं मैं? क्यों तुम्हारी बस्ती के लोग मेरी जान के पीछे पड़े रहते हैं?"

मुरली पर एहसान और प्रसाद का पूरा असर था. उत्तेजित होकर बोला, "पंडितजी, बेफिक्र रहिए. रामदास क्या बेचता है आपके सामने! 'दिल्ली वालों' ने उसे चढ़ा दिया था, वरना कहीं झाड़ू लगाता ही दिखता. उसे तो मैं रास्ते पर लगा दूंगा. अब उस बस्ती में आप राजा की तरह जायेंगे और यह कमाल दिखाऊंगा कि लोग सिर पर उठा लेंगे."

रत्नप्रकाश ने खुशी के मारे पूरी बोतल गिलास में उड़ेलते हुए पूछा, "सच मुरली! प्यारे सच, तो देखो मैं भी तुम्हें सिर पर बैठा लूंगा, इसी बात पर चियर्स."

गिलास से गिलास टकराये और फिर हर शाम टकराते ही रहे. इस नयी दोस्ती ने दोनों को चमकाने का मौका दिया. मुरली के चेयरमैन के सेक्रेटरी बन जाने के बाद लोग अपना काम निकलवाने के लिए रामदास के बजाय मुरली के दरवाजे पर पहुंचने लगे. नौकरी, तबादले, मकान के नक्शे, जमीन, ठेका वगैरह-वगैरह.

इधर रत्नप्रकाश की सभाएं जमने लगीं. मुरली अपनी बस्ती के लोगों को 5-5 रुपये दिलवाकर बसों से बुलवा लेता. जय-जयकार के लिए एक इशारा काफी होता. दिल्ली से आने वाले नेता प्रसन्न होने लगे. पं. रत्नप्रकाश के लिए संसद का टिकट लगभग पक्का हो गया. चुनाव से पहले 'चेयरमैन' साहब का खजाना भरने के लिए 'सेक्रेटरी' ने धड़ाधड़ लोगों के कागजों पर दस्तखत करवाये—हिसाब-किताब बराबर किया जाता रहा. स्वाभाविक था, मुरली को उसका 'प्रसाद' भी मिल रहा था... लेकिन अब चेयरमैन की आंख के सामने नहीं?

और चुनाव के दिनों में मुरली ने जी-जान लगाकर रत्नप्रकाश की हवा बनायी. विरोधियों की सभा में हुल्लड़, पत्थर, मारा-पीटी और 'पंडितजी' की सभा में—'जिंदाबाद', 'जीत के रहेगा रत्नप्रकाश' के नारे. मतदान से दो दिन पहले हरिजन बस्ती में रातोंरात शराब की बोतलों और कपड़ों के ढेर पहुंच गये. जितने वोट, उतने नोट. विरोधी घनश्याम सिंह के कार्यकर्ताओं से भिड़ाकर एक आदमी 'शहीद' कराकर आतंक फैला दिया—"घनश्याम सिंह ठाकुरवादी है... ब्राह्मणों, हरिजनों और मुसलमानों से नफरत करता है. उसे वोट दिया, तो समझो, तुम्हारी बस्ती भी जलेगी तो कोई नहीं पूछेगा." यों यह बात बाद में पता चली कि रत्नप्रकाश का जो कार्यकर्ता मरा था, उसे भीड़ में अपने ही गुट के आदमी ने चाकू मारा था. लेकिन चुनाव के बाद पंडितजी ने ले-देकर मामला दबवा दिया.

कीर्तन के दिन मुरली ने अपने पट्ठों को छोड़ दिया—निगाह रखो, जिस घर का वोट हमारी तरफ न आ रहा हो, बाहर मत निकलने दो. निकले तो सीधे अपने बूथ पर पहुंचाओ. इस तरह चुनावी तिकड़मबाजी और बस्ती के लोगों पर किये गये एहसानों ने मुरली के रहनुमा रत्नप्रकाश को 'दिल्ली-दरबार' का एक रत्न बनवा दिया.

दिल्ली पहुंचकर रत्नप्रकाश ने प्रदेश के लिए रिजर्व कोटे से राज्यमंत्री का पद पाने में सफलता प्राप्त कर ली. उधर अपने निर्वाचन क्षेत्र में पलड़ा भारी रखने के लिए उन्होंने अधिकारियों और पार्टी वालों की आवश्यकतानुसार मीठी-कड़वी बातें कह-सुनकर मुरली को पूरी तरह अपना राजनीतिक सेनापति बना दिया. बस फिर क्या था, मुरली के हर इशारे पर काम होने लगे. तबादला, नियुक्ति, जमीन का झगड़ा, इंडस्ट्री का लाइसेंस, बसों के परमिट. और हां, हरिजन बस्ती में अलग से कालिज खुल गया. चेयरमैन—रत्नप्रकाश और कर्ता-धर्ता सचिव—मुरली. सरकारी ग्रांट में तो कमी हो ही नहीं सकती थी. इसी तरह जमीन के पट्टे और मकानों के लिए ऋण की योजना आयी, तो मुरली की आंख के सामने से निकली हुई हर दर्खास्त पर पंद्रह दिन में सारी कार्यवाही पूरी होती गयी. इस समाज-कल्याण में अपनी गांठ खोले बगैर ही मुरली को भी मेन रोड के किनारे वाली दस बीघा जमीन मिल गयी और बस्ती के बीचोंबीच सबसे ऊंचा 'मुरली सदन' भी खड़ा हो गया.

देखते ही देखते यह नौबत आ गयी कि मुरली के सहारे के बिना 'यंग मिनिस्टर' पंडित रत्नप्रकाश अपने क्षेत्र में दस कदम भी आगे नहीं बढ़ सकते थे. वैसे भी केंद्र और प्रदेश की राजनीतिक खींचा-तानी में उलझे रहने के कारण वह अपने इलाके के लिए विशेष ध्यान नहीं दे सकते थे?

अगला चुनाव करीब आने पर एक शाम 'देवि पूजा' के बाद 'प्रसाद' लेते-लेते मुरली ने अपने नेता से मुस्कराते हुए कहा, "पंडितजी, आखिर ये कब तक चलता रहेगा? आप शहर में राजा थे राजा. दिल्ली में रहकर हाई कमांड के पैर दबाते-दबाते और अधिकारियों के इशारों पर फाइलों में दस्तखत करते रहने से तो आपको जंग लग जायेगी."

पंडितजी जरा चौंके, "मुरली, मैं समझा नहीं, तुम कहना क्या चाहते हो?"

मुरली ने तवा गर्म देखकर छींटा मारा, "लीजिए, अब ये भी हमें समझाना पड़ेगा. आप तो हमारे गुरु हो महाराज. बहरहाल, हम कहना यही चाहते हैं कि छोड़ो दिल्ली-दरबार की सेवा और इस रियासत पर हुकूमत करने का इंतजाम करो. स्टेट का चीफ मिनिस्टर किसी प्राइम-मिनिस्टर से कम नहीं होता पंडितजी. यही नहीं, फिर दिल्ली की राजनीति में भी आपकी बात अधिक सुनी जायेगी.

पंडितजी दो मिनट के लिए बिल्कुल चुप हो गये. 'हूं' करके उन्होंने एक ही सांस में गिलास खाली कर दिया और बोले, "वाह मुरली! तुम तो उस्तादों के भी उस्ताद हो गये. ठीक है, इस बार मैं दिल्ली में साफ कह देने वाला हूं कि मुझे नहीं चाहिए संसद का टिकट... मुझे अपने क्षेत्र में रहकर काम करना है... लोगों के दुख-दर्द दूर करने हैं. यदि मुझे पार्टी में रखना है, तो

—आसपास बिखरी कहानियां—

भगवान के नाम पर

■ मार्टिन जौन 'अजनबी'

शहर के एकमात्र भव्य मंदिर के बाहर और भीतर दर्शनार्थियों की अपार भीड़ लगी हुई थी. शायद आज कोई धार्मिक उत्सव था. मंदिर से कुछ हटकर पूजन सामग्रियों के अलावा फल वगैरह की दुकानें पंक्तिबद्ध लगी हुई थीं.

सहसा चिथड़ों में लिपटी बूढ़ी काया वाली एक भिखारिन फलों की दुकान के समीप आ धमकी, "भला हो बेटा तेरा, भगवान के नाम पर एक केला दे दे!" फलवाला झुंझलाया और फौरन सफेद झूठ बोल दिया, "अभी जाओ, फालतू केला-वेला नहीं है." फिर जाने क्या सोचकर उसने केलों के ढेर से एक सड़ा केला उठाकर उस भिखारिन के हाथ में थमा दिया. केला लेकर भिखारिन ने क्षणांश उसे उलट-पुलट किया और अपने पिचके कटोरे से दस पैसे का एक सिक्का निकालकर फलवाले की ओर बढ़ाते हुए कहा, "ले, पैसे ले, एक केला और दे."

पैसे लेकर फलवाले ने एक बढ़िया-सा केला उसे थमा दिया. अचानक वह भिखारिन मंदिर की ओर मुड़ी और अपने लाठी तथा कटोरे को नीचे रखकर दोनों हथेलियों में केले को पकड़ कर कहने लगी, "देख ले भगवान, तेरे नाम पर मिला हुआ सड़ा केला और पैसे से खरीदा हुआ बढ़िया केला. अब बता, तू बड़ा है या पैसा!" और वह ठठाकर हंसने लगी. फलवाला अपने को व्यस्त प्रदर्शित करने के लिए केलों के ढेर पर अकारण हाथ फेरने लगा. □

एसेंबली का टिकट दे दीजिए."

"अर-र-र पंडितजी, आप तो सारा मामला ही चौपट किये दे रहे हैं. चुनाव से पहले ही पत्ते खोल देंगे, तो बन चुके चीफ मिनिस्टर. तब तो शायद आपको राजनीति छोड़कर हरिजन बस्ती के मंदिर में भगवे कपड़े पहनकर कीर्तन ही करना पड़ेगा. मेरा मतलब तो यह है कि आप दिल्ली में ऐसा हिसाब-किताब बैठाइए कि न केवल आपको पार्लियामेंट का टिकट मिले, बल्कि एसेंबली के टिकटों के बंटवारे में आपकी राय पर विशेष ध्यान दिया जाये. बस, फिर दोनों चुनावों के बाद जब यहां चीफ मिनिस्टर का चक्कर फंसे, तो आप ऊपर से टपक जाइए." यह कहकर मुरली ने पंडित के गिलास को फिर से आधा भर दिया.

गिलास रखने की आवाज ने 'चीफ मिनिस्टरी' के ख्याल में डूबे हुए पंडितजी का ध्यान खींचा. बोले, "बात तो तुम ठीक कहते हो मुरली, लेकिन इधर यह रामदास और उधर ठाकुर धर्मेन्द्र सिंह सबसे मुख्यमंत्री की कुर्सी पर चौकड़ जमाये बैठे हैं, इनका क्या होगा?"

"इनका वही होगा पंडितजी, जो आप चाहेंगे." शेर की तरह जोर से डकार लेते हुए मुरली ने कहा, "यदि दिल्ली में

गपशप

मशवरा

■ ऑस्कर वाइल्ड

एक नवयुवक लेखक, जो बहुत बुद्धिमान और परिश्रमी था, मेरे पास आया और कहने लगा, "मैं एक मुद्दत से लिख रहा हूं और अब तक बहुत कुछ लिख चुका हूं, पर ऐसा लगता है कि देश के सभी समीक्षकों ने जैसे मेरे खिलाफ साजिश कर ली है, क्योंकि किसी भी समीक्षक ने मेरी रचनाओं पर आलोचना नहीं की. कृपया आप अपनी अमूल्य राय प्रदान करें."

मैंने उससे कहा "महाशय! मेरा मशवरा है कि आप भी इस साजिश में शामिल हो जायें!" □

आपकी गोटी फिट है, तो वहीं से इनका पत्ता साफ करवा दीजिए. रामदास का नाम कटवाकर मुझे एसेंबली का टिकट दिलवा दीजिए और युधिष्ठिर सिंह के गुट में फूट डलवा दीजिए. वो लक्ष्मण सिंह, कृपाल सिंह, धनपाल—सब तो मार खाये बैठे हैं—फिर उनकी वही फाइल भी जरा दिल्ली मंगवा लीजिए. अरे वही . . . मेडिकल कालिजों में भर्ती के लिये हुए 'रिश्वत कांड की.' सीधे पचास लाख का मामला था. सी.बी.आई. से जांच की बात ही चल निकली, तो चीफ मिनिस्टरी तो दूर रही, वह अपनी मेंबरी भी भीख की तरह मांगते घूमेगा और तब आप उसकी लिस्ट कूड़ेदान में फेंककर अपनी लिस्ट पास करवा लीजिएगा. फिर बाद में कूद-फांद नहीं करे, इसलिए उस अकेले को उदारता-पूर्वक टिकट दिलवा दीजिएगा. इसके बाद तो एसेंबली में आपका यह सेवक दो सौ पच्चीस एम.एल.ए. की लाइन लगवाकर आपको सलामी न दिलवा दे, तो काला मुंह करके इसे इस जूते मारियेगा."

"अजी हटो, क्या कह रहे हो मुरली!" पंडितजी ने शराब और सुनहरे भविष्य की स्वप्निल गंगा में गोते लगाते हुए, भावुकता के साथ कहा, "तुम मेरे सेक्रेटरी नहीं, मेरे देवता हो. तुम तो भगवान कृष्ण के साक्षात अवतार हो. मैं तो तुम्हारे बल पर जिंदा हूं और मुझे जिंदा रहना है . . . बस यह ठीक है . . . तुमने यह शतरंज जमा दी है. अब देखो 6 महीने बाद इस प्रदेश पर हमारा ही डंका बजा करेगा. बोलो कैबिनेट में कौन-सा डिपार्टमेंट संभालोगे—होम, फाइनेंस या सोशल वेलफेयर!"

पंडितजी नशे में भावुक हो रहे थे और अपना दांव सही पड़ता देख मुरली का नशा उतर रहा था. उसने व्यावहारिक बनते हुए कहा, "पंडितजी, क्यों मजाक बनाते हो. आपके चरणों में जगह बनी रहे और अपने 'भाई-बंधुओं' की सेवा करने का अवसर . . . मेरे लिए तो इतना ही काफी है."

और सचमुच मुरली की बिछाई शतरंज की गोटें कमाल दिखाती रहीं—पंडितजी पार्लियामेंट का चुनाव जीते, एसेंबली के टिकटों में उनकी राय को विशेष महत्त्व मिलने से रामदास, युधिष्ठिर सिंह और दस वर्षों से राज्य के मुख्यमंत्री बने हुए सोमनाथ शर्मा के पलड़े उलट गये. जिधर देखो, उधर पंडित रत्नप्रकाश का जादू छा गया. सो, एसेंबली के चुनाव में मुरली भी आसानी से एम.एल.ए. बन गया और अपने पुराने 10-15 परिचित पट्ठों को भी अलग-अलग क्षेत्रों से जितवा लाया. चुनाव में तो हवा चलनी चाहिए और जो हवा का फायदा उठा ले, वही असली राजनीतिज्ञ.

लेकिन मुरली यह सपने में भी नहीं सोच सकता था कि मुख्यमंत्री पद का कोहिनूरी 'ताज' पहनने के बाद पंडित रत्नप्रकाश उस सीढ़ी को गिराने में तनिक भी नहीं हिचकिचायेंगे, जिसके बल पर वह इस 'सिंहासन' को पाने में सफल हो सके थे. तभी तो तो मुख्यमंत्री पद की शपथ लेते ही पंडितजी ने अपने मंत्रिमंडल की लिस्ट बनाने के लिए मुरली से चर्चा करना कतई आवश्यक नहीं समझा. उन्हें यह महसूस होने लगा कि दिल्ली में रहने की बात और थी, प्रदेश में राज करने के लिए अपनी लगाम किसी और के हाथ में नहीं देनी चाहिए. फिर जो मुरली उनके केंद्रीय मंत्री बनने पर शहर का सर्वेसर्वा हो गया था, वह स्वयं होम मिनिस्टर बनाने के बाद अवसर मिलने पर पंडितजी को ही हवालात में रखवाने का इंतजाम कर सकता है. उनकी 'काले-धंधे' की जीती-जागती फाइल तो वह खुद ही है.

सो, उन्होंने रातों-रात मुरली के पुराने दिनों के बलात्कार कांड की एक फाइल बनवाकर रामदास गुट के एक पट्ठे घनश्याम दास के हाथों दिल्ली दरबार तक पहुंचा दी. नतीजा यह है कि अब सबको एक-दूसरे से भिड़वाकर पं. रत्नप्रकाश कैबिनेट बनाने के लिए स्वतंत्र हैं और हाई कमांड के बहाने सबसे घुटने टिकवा रहे हैं.

■

रहमान साहब, इन्हीं विचारों में डूबे थे कि बाहर जोर से हार्न बजने के साथ गाड़ी रुकने की आवाज आयी—एक हलचल-सी मच गयी. रहमान साहब कपड़े ठीक करके खड़े हो गये. बाहर से पंडित रत्नप्रकाश सबका अभिवादन स्वीकार करते हुए अंदर आये. चेहरे पर विजय की मुस्कान और गंभीरता के मिश्रित भाव.

उन्होंने देरी के लिए सबसे नाटकीय माफी मांगी और बताया, "मुझे हाई कमांड के अनुशासन की सीमाओं के सामने झुकना पड़ा है. लेकिन मेरा विश्वास है कि मेरे साथियों की शक्ति, मित्रता और सहयोग में कोई अंतर नहीं आयेगा." फिर उन्होंने सबसे अलग-अलग बातचीत करने की इच्छा व्यक्त की और सबसे पहले मुरली को ही अपने पास बुलाया. उसके गले में हाथ डालकर वह अंदर वाले कमरे में घुस गये.

पंद्रह मिनट बाद कमरे का दरवाजा खुला और अकेले मुरली बाहर आता दिखाई दिया—रहमान साहब ने आवाज लगायी, "मुबारक हो भाई! हमें भी खुशखबरी सुना दो! होम ले रहे हो या फाइनेंस." लेकिन मुरली तो जैसे कुछ सुन ही नहीं रहा था. वह नीची निगाह किये तेजी से कदम बढ़ाकर चला गया. सामने बैठे हुए चंदनसिंह ने स्थिति भांपते हुए कहा, "रहने दीजिए रहमान साहब, मुरली की तो 'मुरली' बज गयी! आप अपना राग संभालिए, नहीं वह भी हाथ से न निकल जाये." □

● दुर्गनिवार स्ट्रासे-3/1606, 5 कोलोन-51 (पश्चिम जर्मनी)